मानसून में कुक्कुट फार्म का प्रबंधन

कृषि कुंभ (अगस्त, 2023),
खण्ड 03 भाग 03, पृष्ठ संख्या 109–111

मानसून में कुक्कुट फार्म का प्रबंधन

डॉ. बलराम चौहान[1], डॉ. दर्शना भैसारे[2] एवं डॉ. परिमल परेश्वर[3]
[1]स्नातकोत्तर विधार्थी, [2]सहायक प्राध्यापक, [3]स्नातकोत्तर विधार्थी,
कुक्कुटपालन शास्त्र विभाग,
नागपुर पशुचिकित्सा महाविद्यालय, नागपुर, उव. –७७७६६५६६४५, भारत।
Email Id: darshanabhaisare@gmail.com

बरसात का मौसम आमतौर पर आर्द्रता में वृद्धि और तापमान में कमी का पर्याय हैय वर्षा भोजन की गुणवत्ता और मात्रा दोनों को प्रभावित करती है, जबकि हवा की गति से विभिन्न तरह की बीमारियो के फैलने का खतरा रहता है। मानसून के आगमन के साथ, किसान को फसलो के साथ साथ पशुधन की थोड़ी अधिक ध्यान देने की आवश्यकता है। जैसा कि हम जानते हैं, कुकुट पालन भारत सहित दुनिया भर में सबसे अधिक लाभदायक कृषि व्यवसाय के रूप में लगातार बढ़ रही है। हालांकि, मानसून कुकुट पालको के लिए एक चुनौतीपूर्ण मौसम के रूप में आता है चूंकि बरसात और ठंड का मौसम तापमान और मौसम की स्थिति में परिवर्तन लाता है, यह कुकुट फार्म पर गहरा प्रभाव छोड़ता है।जब भी बारिश होती है तो वातावरण का तपमान लगभग 6–7 °c तक नीचे आ जाता है और अगले ही दिन जैसे ही बारिश रुकती हे वैसे ही तापमान मे वृदि होती है इस घटते और बढ़ते तापमान की वजह से मुर्गीयो में तनाव की स्थति होती है सामन्यत यह हमें मानसून के शुरुआती समय मे देखने को मिलता है । आपको यह जानने की आवश्यकता है कि मौसम की स्थिति मुर्गी पालन में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है इसलिए, एक मुर्गी पालक के रूप में, यह सीखना बहुत महत्वपूर्ण है कि बरसात के मौसम में पोल्ट्री फार्म कैसे संचालित किया जाए।

कुक्कुट पक्षी और कुक्कुट उत्पादन आम तौर पर मौसमी जलवायु या मौसम परिवर्तन से प्रभावित होते हैं। उदाहरण के लिए, गीले या ठंडे मौसम में, मुर्गियाँ अधिक फीड खाती हैं, कम पानी पीती हैं और गर्मी पैदा करने और उन्हें गर्म रखने के लिए एक साथ बैठती हैं। दूसरी ओर, मुर्गियां और अन्य पशु पक्षी अपने शरीर को ठंडा करने के लिए गर्म मौसम या मौसम में कम फीड खाते हैं और अधिक पानी पीते हैं। ये परिवर्तन पक्षियों के उत्पादन को प्रभावित करते हैं, विशेष रूप से अंडे देने वाले पक्षियों को, क्योंकि अत्यधिक ठंड या गर्म मौसम में अंडे का उत्पादन कम हो जाता है, अंडे के उत्पादन में कमी आती है क्योंकि जब अत्यधिक ठंड या गर्म परिस्थितियां होती हैं, तो ये पक्षी तनावग्रस्त हो जाते हैं, और उनकी रोग प्रतिरोदक क्षमता कम हो जाती है इससे उनमे होने वाली बीमारियों की संभावना अधिक हो जाती है ।

कुक्कुट व्यवसाय सुयोजित तरीके से चलता रहे तथा कम से कम पक्षियों के उत्पादन पर बरसात के मौसम का प्रभाव पड़े इसलिए हमे विभिन्न बातो का ध्यान रखना चाहिए जो कि निम्नलिखित है

1. शेड का रख रखाव –

- बारिश का मौसम शुरु होने से पहले हमे इस बात का ध्यान जरूर रखना चाहिए की अगर शेड के अंदर कोई दरार हो, कोई टूट फुट हो

तो उसको जल्दी ही दुरुस्त कर लिया जाये ताकि शेड के अन्दर पानी ना आये, इससे बेडिंग या लिटर के गीले होने की संभवना रहती है ।

- इस बात का जरूर ध्यान रहे की शेड के आसपास जल का भराव ना हो, इससे बहुत सारी बीमारियों के फैलने की संभावना रहती है । शेड हमेशा ऊचाई वाली जगह पर बना हुआ हो तथा शेड हमेशा जमीन से 2 फीट की उचाई पर हो ताकि शेड के अंदर पानी ना आये ।
- शेड के ओवरहंग या छज्जा की लम्बाई कम स कम 3 फीट होनी चाहिए ताकि बारिश का पानी सीधे शेड के अंदर ना आये। शेड की खुली तरफ परदे लगा कर रखे ताकि बरिश का पानी अंदर ना आये।
- शेड के आसपास का लगभग 5 मीटर की जगह को पुरा साफ कर लिया जाये ताकि शेड के आसपास कोई घास फुस ना हो।
- शेड के अंदर पुरी मरम्मत की जाये ताकि जब बारिश हो तो चूहें या साप जैसे जानवरो से बचा जा सके।
- बारिश का वातावरण जीवाणु, विषाणु, फंगल और साथ ही मक्खियो तथा मच्छरो के पैदा होने, बढ़ने और फैलने मे काफी मददगार होता है इससे फार्म पर बीमारियों के फैलने का खतरा बढ़ जाता है इसलिए फार्म पर समय समय पर इनसेक्टिसिड और फंगसाइड का छिड़काऊ करे।
- साथ ही बीमारियों से बचाव के लिए पक्षियों को एंटी–बायोटिक जरूर दे।
- इस समय जल निकासी व्यवस्था पर जरूर ध्यान दे, मानसून आने से पहले जल निकासी की पूरी सफाई की जाये ताकि बारिश का पानी अच्छे से निकल जाये और फार्म पर जल भराव की समस्या पैदा ना हो।

2. फीड का रख रखाव –

- बरसात के मौसम मे मुर्गीयों के फीड को हमेशा सूखी जगह पर रखे, ध्यान रखे की फीड हमेशा दीवार से 1 फीट की दूरी पर हो ताकि फीड मे नमी ना आये।
- बारिश के मौसम से पहले ही जरूरत के हिसाब से पूरा फीड खरीद ले ओर अच्छी सूखी जगह पर सहेज कर रखे, इस बात का ध्यान रहे की फीड बारिश के पानी से गीला ना हो।
- बारिश के मौसम मे वातावरण मे होने वाली नमी के कारण फीड मे फंगल लगने की संभावना अधिक होती है इसलिए हमेशा बारिश के मौसम मे फीड के अंदर एंटी फंगल जरूर मिलाये। फंगल से होने वाली बीमारियों से मुर्गीयों के उत्पादन तथा उनके प्रदर्शन पर प्रभाव पड़ता है इसलिए हमेशा फीड को फंगल से बचा कर रखना चाहिए।
- मानसून के समय दिन की लम्बाई कम हो जाती है और तापमान मे गिरावट देखने को मिलती है ऐसा समय मुर्गीयों के पंख गिराने के लिए सबसे अनुकूल रहता हैं ताकि नये पंख आ सके ।इस समय मुर्गीयो मे अंडा उत्पादन कम हो जाता हे या फिर पूरी तरह से बंद हो जाता है इस समय मुर्गी अपने शरीर के अंदर पोषण को इकट्ठा करती है।
- इसलिए इस समय मुर्गीयों को पोषण से भरपुर फीड देना चाहिए।

3. पीने का पानी –

- बरसात के मौसम मे साफ पीने के पानी की बहुत समस्या होती है जो भी साफ पानी के संसाधन होते है जैसे कुआ, तालाब, बोरवेल सभी बारिश के पानी से दुषित हो जाते है ऐसे मे मुर्गीयों के लिए साफ पानी की जरूरत होती है।

KrishiKumbh Online E-Magazine
www.KrishiKumbh.com

- अगर पीने का पानी साफ नहीं होता हे तो ऐसे मे बहुत सारी बीमारियों की होने की संभावनाएं बढ़ जाती हे और उत्पादन कम हो जाता है।
- पानी को मुर्गीयों को देने से पहले हमेशा उसको क्लोरिन या ब्लींचिंग पाऊडर से साफ करे। या फिर पानी को 24 घंटे के लिए छोड़ दे ताकि सारी गंदगी नीचे बैठ जाये।
- दूषित पानी की वजह से पेट मे कीडों की संभावना अधिक होती है इससे बचाव क लिए बीच–बीच मे करते रहे।

लिटर का रख रखाव –

- बारिश के मौसम मे वातावरण मे आद्रता ओर नमी बहुत ज्यादा होती है। ऐसे वातावरण मे लिटर या बेडिंग का रख रखाव् करना बहुत जरूरी होता हैं। सामान्यतः लिटर मे नमी की मात्रा 25% होती हे ओर अगर नमी की मात्रा 30% से ज्यादा होती है तो इससे कॉक्सिडिओसीस नामक बीमारी के होने की संभावना होती है।
- साथ ही बढ़ते हुए नमी के कारण आमोनिया की मात्रा भी बढ़ने लगती हैं। अगर शेड के अंदर अमोनिया की मात्रा 25 ppm से ज्यादा होती है तो यह मुर्गीयों के स्वसन तंत्र को प्रभावित करती है।
- इसलिए यह सुनिश्चित करे की हमेशा लिटर या बेडिंग मे नामी की मात्रा 25% ओर इससे कम ही रहे, नही तो कॉक्सिडिओसीस ओर अमोनिया की वजह से मुर्गीयों के उत्पादन तथा स्वास्थ्य के उपर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है।
- अगर लिटर गीला होता है तो उसे तुरंत बाहर निकल कर सूखा लिटर या बेडिंग मिलाये ताकि नमी ज्यादा ना हो। तथा समय समय पर लिटर को उपर नीचे करते रहे । लिटर को सुखा रखने क लिए उसमे हाइड्रेटेड लाइम (7 kg) और सुपर फोस्फेट (7 kg per 100 sq- Feet) के हिसाब से मिला सकते हैं।

5. ब्रूडिंग चिक्स का रख रखाव –

- ब्रूडिंग चिक्स को शुरुआती दिनों मे बहुत देखरेख की जरूरत होती है और मानसून के समय ये जिम्मेदारी ओर भी बढ़ जाती है कि उनकी देखरेख अच्छे से की जाए।
- बारिश का पानी शेड के अंदर आने तथा वातावरण मे नमी के ज्यादा होने से शेड के अंदर अमोनिया की मात्रा बढ़ने लगती है ऐसे मे जहा पर कोल ब्रूडर उपयोग किये जाते हे वहा पर इसका नकारात्मक प्रभाव चिक्स के विकास पर देखने को मिलता है।
- इसलिए हमेशा शेड के परदे को उपर से 1–2 फीट खोल कर रखे ताकि साफ हवा का आदान प्रदान हो सके और शेड के अंदर अमोनिया की मात्रा कम बनी रहें।

6. लाइट का प्रबंधन

- मानसून के समय दिन की लबाई कम होने लगती है ऐसे मे फार्म पर जो भी पक्षी विकास की स्थति या फिर उत्पादन की स्थति मे हे इसका सीधा सीधा प्रभाव मुर्गीयों के विकास ओर उत्पादन पर पड़ता हे और उनका विकास और उत्पादन दोनो मे देरी होती है।
- इससे सीधे मुर्गी पालक को नुकसान होता है क्योकि मुर्गी अपना वजन समय पर नही ले पाती है और जो अंडे देने वाली मुर्गी हे वो भी देरी से उत्पादन शुरु करती है।
- इसलिए शेड के अंदर प्रकाश का पुरा प्रबंध कर के रखे ओर जरूरत के हिसाब से मुर्गीयों को लाइट मे रखे (ब्रायलर– 23 घंटे , लेयर – 16 घंटे लाइट)।